# आजाद हिन्द फौज और सुभाषचन्द्र बोस

## (I.N.A and subhas chandra Bose)

[Important points.
महत्वपूर्ण तथ्य.

भारतीय राजनीति में वामपंथी आंदोलन के प्रणेताओं में सुभाषचन्द्र बोस का नाम पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ लिया जाता है।

दो बार सुभाषचन्द्र बोस को कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था। आगे चलकर कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के साथ मतभेद होने पर उन्होंने 'फारवर्ड ब्लाक' की स्थापना की और जर्मनी चले गये।

### जीवनी और कार्य

सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक नामक नगर में हुआ था। 21 वर्ष की आयु में उन्होंने I.C.S की परीक्षा पास की। बाद में उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

1921 के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें 6 मास की सजा भुगतनी पड़ी।

नेहरू रिपोर्ट के विरोध में उन्होंने 'Independent Legue' की स्थापना की। 2 जुलाई, 1940 को भारत रक्षा कानून के तहत सुभाषचन्द्र बोस को कलकत्ता में गिरफ्तार कर लिया गया।

### भारत से पलायन और आजाद हिन्द फौज का गठन

कलकत्ता के प्रेसीडेंसी जेल में सुभाषचन्द्र बोस को रखा गया। 17 नवंबर 1940 को सुभाष जेल से भाग गये। वह 28 मार्च 1941 ई० को बर्लिन पहुंच गये। वहां उन्होंने बर्लिन रेडियो से ब्रिटिश विरोधी प्रचार

प्रारंभ किया। जर्मनी में उन्हें 'नेताजी' की उपाधि दी गयी।

जर्मनी में सुभाष ने भारतीय सैनिकों के दो दलों का गठन किया था। पेरिस और रोम में स्वतंत्र भारत केंद्र की स्थापना की गयी थी।

## बोस का जापान में आगमन और अस्थायी सरकार की स्थापना

द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध जापान की सफलता से प्रभावित होकर टोकियो में भारत के क्रांतिकारी रासबिहारी बोस ने मार्च 1942 में आजाद हिंद फौज (I.N.A) का गठन किया। इसका अधिवेशन बैंकाक में जून, 1942 ई० में हुआ। इसमें सुभाषचन्द्र बोस को आमंत्रित किया गया। आगे चलकर सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज का दायित्व स्वीकार किया। 21 अक्टूबर, 1943 को नेताजी ने सिंगापुर में अस्थायी सरकार की स्थापना की घोषणा की।

अस्थायी सरकार की स्थापना के बाद सुभाषचन्द्र बोस ने जापानियों के सहयोग से भारत में अंग्रेजों पर आक्रमण की योजना बनायी। जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप अस्थायी सरकार के अधीन कर दिया।

4 फरवरी, 1944 को आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजों के क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया। कोहिमा पर भी आजाद हिंद फौज ने राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया। प्रारंभिक आक्रमण में कई भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त कराने में आजाद हिंद फौज को सफलता मिली।

22 सितंबर 1944 को नेताजी ने शहीद दिवस के अवसर पर अपने सैनिकों को यह कहा था 'तुम अपना खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

13 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के दो

बड़े नगरों हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराकर पूर्णतया नष्ट कर दिया। सुभाषचन्द्र बोस को रंगून छोड़कर टोकियो जाना पड़ा। रास्ते में विमान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर 18 अगस्त 1945 ई. को सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु हो गयी।

## आजाद हिंद फौज पर मुकदमा

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद आजाद हिंद फौज के तीन अधिकारियों कर्नल शाहनवाज, कप्तान ढिल्लों और लेफ्टेनेन्ट सहगल पर मुकदमा चलाया गया। इसलिए बाद में जनता के विरोध को देखते हुए उन्हें रिहा कर दिया गया।

इसलिए सुभाषचन्द्र बोस आजाद हिंद फौज के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने में सफल नहीं हुये। लेकिन उनके कार्यक्रम से आगे चल और बापुसेना के विद्रोह को प्रेरणा आजाद हिंद फौज से ही मिली थी। इस दृष्टि से भारत को स्वतंत्रता की ओर बढ़ाने में सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिंद फौज के सैनिकों का योगदान प्रशंसनीय माना जाता है।